ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 8.4
IJAR 2021; 7(5): 374-376
www.allresearchjournal.com
Received: 23-02-2021
Accepted: 09-04-2021

श्वेता सिंह
शोधार्थी शिक्षा, अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

डॉ. एस. के. त्रिपाठी
सहा.प्राध्यापक शिक्षा, शासकीय शिक्षक शिक्षा महाविद्यालय, रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
श्वेता सिंह
शोधार्थी शिक्षा, अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

क्रियाकलाप आधारित शिक्षण पद्धति एवं परम्परागत शिक्षण पद्धति का उपलब्धि स्तर पर प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन

श्वेता सिंह एवं डॉ. एस. के. त्रिपाठी

सारांश
प्रस्तुत शोध अध्ययन का उद्देश्य ''क्रियाकलाप आधारित शिक्षण पद्धति एवं परम्परागत शिक्षण पद्धति का उपलब्धि स्तर पर प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन'' को प्राप्त करने के लिए शोधार्थी ने 120 विद्यार्थियों को उद्देश्यपूर्ण न्यादर्श के रूप में चुना जिसमें से 60 विद्यार्थी क्रियाकलाप आधारित शिक्षण पद्धति विद्यालयों के एवं 60 विद्यार्थी परम्परागत शिक्षण पद्धति विद्यालयों के थे। जिनका दोनों ही सार्थकता स्तर 0.05 एवं 0.01 पर माध्यों का सार्थक अन्तर ज्ञात किया गया। प्राप्त परिणामों से स्पष्ट है कि क्रियाकलाप आधारित शिक्षण पद्धति एवं परम्परागत शिक्षण पद्धति में अध्ययनरत विद्यार्थियों की उपलब्धि स्तर में सार्थक अन्तर है। इसी प्रकार क्रियाकलाप आधारित शिक्षण पद्धति एवं परम्परागत शिक्षण पद्धति में अध्ययनरत विद्यार्थियों की मानसिक विकास में सार्थक अन्तर है।

कूटशब्द : क्रियाकलाप, परम्परागत, शिक्षण पद्धति, उपलब्धि स्तर, प्रभाव

प्रस्तावनाः
बच्चों के सीखने का क्षेत्र व्यापक है। उसे बन्द कमरे में शिक्षक के द्वारा केवल किताबी अधिगम से नहीं बांधा जा सकता। अपने पढ़ने लिखने के प्रारंभिक दौर में यदि बच्चे को अपने घर–परिवार के लाड़–दुलार के वातावरण में रहकर सीखने के अवसर दिए जाए तो उसके मन में विद्यालय आने का आकर्षण भी बना रहेगा और शिक्षक छात्र के मित्रतापूर्ण संबंध बने रहने से 'भयमुक्त शिक्षा' भी स्थापित हो सकेगी।
सरकार द्वारा क्रियाकालाप आधारित अधिगम प्रारम्भ किया जाने के पश्चात् राज्य शिक्षा केन्द्र द्वारा बाह्य एजेन्सी से कराए गए शोध कार्य ''क्रियाकलाप आधारित शिक्षण कार्यक्रम की प्रभावशीलता का अध्ययन'' के शोध निष्कर्ष के अनुसार–

- गणित उपलब्धि परीक्षण पर यह पाया गया है कि 51.20 प्रतिशत क्रियाकलाप आधारित विद्यार्थियों एवं 35.80 प्रतिशत गैर क्रियाकलाप आधारित विद्यार्थियों ने ए ग्रेड प्राप्त किया है।
- हिन्दी उपलब्धि परीक्षण पर यह पाया गया है कि 37.40 प्रतिशत क्रियाकलाप आधारित विद्यार्थियों एवं 13.80 प्रतिशत गैर क्रियाकलाप आधारित विद्यार्थियों ने ए ग्रेड प्राप्त किया है।

पूर्ववर्ती शोध अध्ययनों का विवरण :
किसी भी शोध कार्य को सोद्देश्य तथा अधिक प्रभावी बनाने के दृष्टिकोण से यह आवश्यक हो जाता है कि शोधार्थी अपनी शोध समस्या के समरूप पूर्व में किए गये अन्य शोध कार्यों के बारे में संक्षिप्त जानकारी प्राप्त कर ले। इसी दृष्टिकोण से शोधार्थी ने क्रियाकलाप आधारित शिक्षण पद्धति एवं परम्परागत शिक्षण पद्धति का उपलब्धि स्तर पर प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन पर किये गये कुछ प्रमुख तथा सहज रूप से उपलब्ध पूर्व शोध अध्ययनों के विषय–वस्तु की जानकारी प्राप्त करने का प्रयास किया है। संक्षेप में उनका विवरण निम्न है – कपिल, एच.के. (1980)[1], भटनागर, सुरेश (1980)[2], शिक्षा विभाग प्राथमिक शिक्षा (1985)[3], सुलेमान मुहम्मद (2006)[4], व खान, प्रो. एस. एच. और श्रीमती शुक्ला भट्टाचार्य (1987)[5].

अध्ययन के उद्देश्य –
1. क्रियाकलाप आधारित शिक्षण पद्धति से विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि ज्ञात करना।
2. क्रियाकलाप आधारित शिक्षण पद्धति से विद्यार्थियों का मानसिक विकास पर प्रभाव ज्ञात करना।

परिकल्पना –

एच –1 क्रियाकलाप आधारित शिक्षण पद्धति एवं परम्परागत शिक्षण पद्धति से अध्ययनरत विद्यार्थियों की उपलब्धि स्तर में सार्थक अन्तर नहीं है।

एच –2 क्रियाकलाप आधारित शिक्षण पद्धति एवं परम्परागत शिक्षण पद्धति से अध्ययनरत विद्यार्थियों के मानसिक विकास में सार्थक अन्तर नहीं है।

न्यादर्श –

प्रस्तुत शोध कार्य हेतु सीधी जिले का सीधी विकासखण्ड का चयन किया गया है विकास खण्ड के क्रियाकलाप आधारित शिक्षण के 5 प्राथमिक विद्यालयों एवं परम्परागत आधारित शिक्षण के 5 प्राथमिक विद्यालयों का चयन दैव निदर्शन विधि से किया गया। सभी चयनित विद्यालयों से 12–12 छात्र–छात्राओं का चयन उद्देश्यपूर्ण न्यादर्श के रूप में किया गया है।

उपकरण –

प्रस्तुत शोध हेतु निम्नलिखित उपकरणों का उपयोग किया गया है –

- साक्षात्कार अनुसूची
- शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण पत्रक (स्व निर्मित)

सांख्यिकीय प्रविधियाँ –

प्रस्तुत अध्ययन में माध्य एवं प्रमाणिक विचलन के आधार पर गणना कर 'टी–परीक्षण' द्वारा दो समूहों के मध्य अन्तर की सार्थकता ज्ञात की गयी है।

परिणामों का सारणीयन एवं विश्लेषण –

एच –1 "क्रियाकलाप आधारित शिक्षण पद्धति एवं परम्परागत शिक्षण पद्धति से अध्ययनरत विद्यार्थियों की उपलब्धि स्तर में सार्थक अन्तर नहीं है।"

सारणी क्रमांक – 1 : क्रियाकलाप आधारित शिक्षण पद्धति एवं परम्परागत शिक्षण पद्धति से अध्ययनरत विद्यार्थियों की उपलब्धि स्तर का तुलनात्मक अध्ययन

क्रमांक	समूह	N	M (माध्य)	मानक विचलन (S.D.)	स्वतंत्रता के अंश (D.F.)	t-value	परिणाम (Result)
1.	ग्रामीण	60	72	19.34	118	4.69	0.05 एवं 0.01 पर सार्थक है।
2.	शहरी	60	54.2	20.97			

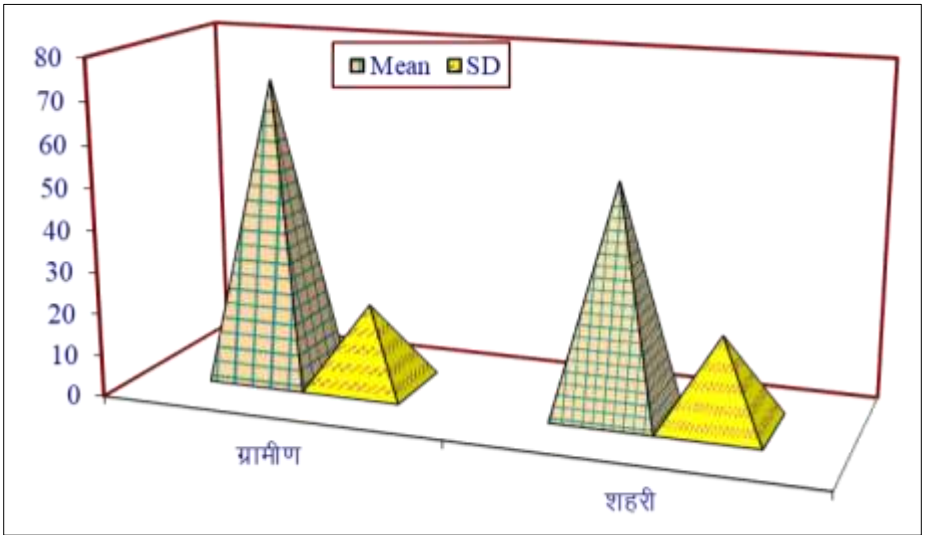

आरेख क्र. 1 : क्रियाकलाप आधारित शिक्षण पद्धति एवं परम्परागत शिक्षण पद्धति से अध्ययनरत विद्यार्थियों की उपलब्धि स्तर का तुलनात्मक अध्ययन

उपर्युक्त सारणी एवं आरेख क्रमांक –1 से ज्ञात होता है कि क्रियाकलाप आधारित शिक्षण एवं परम्परागत शिक्षण के उपलब्धि का माध्य क्रमशः 72 एवं 54.2 है एवं प्रमाणिक विचलन का मान क्रमषः 19.34 एवं 20.97 है। तथा इनके मध्य 'ज' परीक्षण का मान 4.69 प्राप्त हुआ है जो कि स्वतंत्रता के अंश 118 पर दोनों ही सार्थकता स्तर 0.01 एवं 0.05 के सारणी मान गणनीय मान से कम है।

अतः प्रस्तुत शोध परिकल्पना एच – 1 निरसित होती है। परिणामस्वरूप यह स्पष्ट है कि क्रियाकलाप आधारित शिक्षण पद्धति एवं परम्परागत शिक्षण पद्धति में अध्ययनरत विद्यार्थियों की उपलब्धि स्तर में सार्थक अन्तर है।

एच –2 "क्रियाकलाप आधारित शिक्षण पद्धति एवं परम्परागत शिक्षण पद्धति से अध्ययनरत विद्यार्थियों के मानसिक विकास में सार्थक अन्तर नहीं है।"

सारणी क्रमांक – 2 : क्रियाकलाप आधारित शिक्षण पद्धति एवं परम्परागत शिक्षण पद्धति से अध्ययनरत विद्यार्थियों के मानसिक विकास का तुलनात्मक अध्ययन।

क्रमांक	समूह	N	M (माध्य)	मानक विचलन (S.D.)	स्वतंत्रता के अंष (D.F.)	t-value	परिणाम (Result)
1.	ग्रामीण	60	68.5	19.36	118	4.48	0.05 एवं 0.01 पर सार्थक है।
2.	शहरी	60	51.4	22.41			

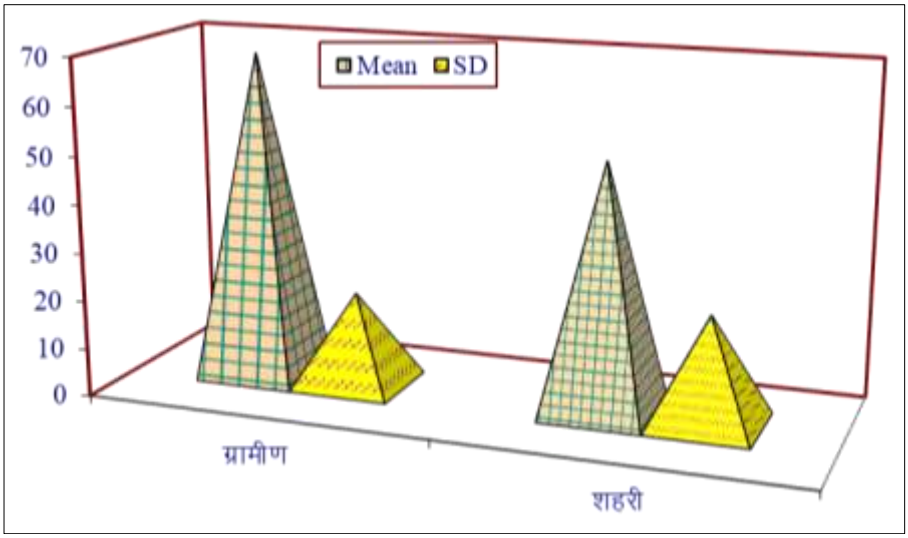

आरेख क्र. 2 : क्रियाकलाप आधारित शिक्षण पद्धति एवं परम्परागत शिक्षण पद्धति से अध्ययनरत विद्यार्थियों के मानसिक विकास का तुलनात्मक अध्ययन।

उपर्युक्त सारणी एवं आरेख क्रमांक 2 से ज्ञात होता है कि क्रियाकलाप आधारित शिक्षण पद्धति से अध्ययनरत विद्यार्थियों एवं परम्परागत शिक्षण पद्धति से अध्ययनरत विद्यार्थियों का माध्य क्रमशः 68.5 एवं 51.4 है तथा प्रमाणिक विचलन का मान क्रमशः 19.36 एवं 22.41 प्राप्त हुआ है। इनके मध्य ष्जष परीक्षण का मान 4.44 प्राप्त हुआ है। जो कि स्वतंत्रता के अंश 118 पर दोनों ही सार्थकता स्तर 0.01 एवं 0.05 के सारणी मान से अधिक है।
अतः प्रस्तुत शोध परिकल्पना एच –2 निरसित होती है। परिणामस्वरूप यह स्पष्ट है कि क्रियाकलाप आधारित शिक्षण पद्धति एवं परम्परागत शिक्षण पद्धति से अध्ययनरत विद्यार्थियों के मानसिक विकास में सार्थक अन्तर हैं।

निष्कर्ष –

''क्रियाकलाप आधारित शिक्षण पद्धति एवं परम्परागत शिक्षण पद्धति उपलब्धि स्तर पर प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन'' करने के पश्चात् निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए –

- क्रियाकलाप आधारित शिक्षण पद्धति एवं परम्परागत शिक्षण पद्धति में अध्ययनरत विद्यार्थियों की उपलब्धि स्तर में सार्थक अन्तर है।
- क्रियाकलाप आधारित शिक्षण पद्धति एवं परम्परागत शिक्षण पद्धति में अध्ययनरत विद्यार्थियों की मानसिक विकास में सार्थक अन्तर है।

संदर्भ ग्रन्थ –

1. कपिल, एच.के. (1980), सांख्यिकी के मूल तत्व, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
2. भटनागर, सुरेश (1980), ''शिक्षा मनोविज्ञान'', इन्टरनेशनल पब्लिशिंग हाउस, मेरठ।
3. शिक्षा विभाग प्राथमिक शिक्षा, ''मानवीय मूल्यों की शिक्षा'' शिविर प्रकाशन, बीकानेर, राजस्थान (1985)
4. सुलेमान मुहम्मद (2006), मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियॉ, जनरल बुक एजेन्सी, पटना।
5. खान, प्रो. एस. एच. और श्रीमती शुक्ला भट्टाचार्य, अध्यापकीय दर्शिका : परिवेशीय अध्ययन–कक्षा 1. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली (भारत), 1987, पृष्ठ 44.